काशी और शिवत्व का कथात्मक विवेचन

काशी और काशी की विशेषताओं पर कुछ एक कई दर्जन किताबें लिखी जा चुकी हैं, नये को बात यह है कि काशी पर जो भी लिखा गया, लेखों ने बड़े पास से गया. अपनी विशिष्टताओं के लिए विख्यात इसी संस्कृति पर 'काशी गाथा-सुकृति' पुस्तक आती है. इसमें काशी के उस छोर की विवेचना से गहराता जी गयी है, जो काशी विश्वनाथ में दर्शन ही नियें. इसमें धर्म-अध्यात्म के साथ लिए की काया सिद्धांतियों का विवरण है, बल्कि अनेक जी निर्मित धारा का भी बखान है. लेखक द्वय बताते हैं कि परमात्मा की पुरु का सदैव ही मानव को शिवत्व उदात्त एवं महाकृतिक गंध को उसके काल में पुकारने जो आयुक्त है, परंतु मानव जी श्रद्धा ही उसके प्रति भोलापी है. इस लिए वह प्रथम शिवत्व से चुके रहा है. परंतु किसी यही कोई अनेक का गहन उपलब्धता के प्रति पूर्ण श्रद्धा से भर उस उस परम शिवत्व को उपलब्ध हो ही जाता है.

कहानी एक ही है और गायक भी एक. किंतु एक ही गायक के दो-दो रूप. एक आधार में कहार, तो दूसरा अनाहत-अहात. एक पुरुषों से जगती सुरभि, तो दूसरा शिवा में जगती मुर्दों के जगती दुर्गंध. एक से मुर्दे से जगाया दिव्य चंद्रशेखर आराधना की अंकोरी धारा. एक की शिवत्व साधनाएं का शिवत्व. तो दूसरा की शिवत्व दुख का केवल. रात्रि के गहन अंधकार में काशी के महाश्मशान मणिकर्णिका पर चिता में शव जलाते चाण्डाल 'महा' के अंगार से भी चिंगारी गहन श्रद्धा को कि यह जलती चिता से स्वर्ग लोक पाता था-'यह अग्नि ही है जो मिटा में भी जलती रहती है. निर्निमेष ही अंधकार में भी कोई सेवन ताप डोलता भी है और बोलता भी.' 'की अगेंदि' ने इस बेजन ताल को यों व्यक्त किया है.

कुछ डोलता था पुरा अपार अंधकार में,
नाममीन गति-सा, सिहरता सिहरा-सा,
लहराहीन कुछ, अपूर्ण, आधी,
भाषा हुआ कि हो, किंतु बिना प्रकार की.

'काशी गाथा-सुकृति' में गायक गया, अंधकार कर्म करते हुए जैसे काशी कबीरपंथ की ओर चलता है, तो काशी अनुभवगम्य शिव को पाने के लिए लालायित हो जाता है. गया काशी गायक की भांति नजर पड़ता है, तो काशी सिद्ध पुरुष की भांति आसन लगा कर ध्यान में लीन दिखता है. लेखक द्वय ने इस किताब में यही खासियत बनाने की कोशिश की है कि सारा काशी खोजा नहीं, यह काल की स्मृति में सदैव धूमता रहता है. गया की शाख पर उगा 'महा' भारी कल्पना का वह पुष्प बन सबके साथ हो उठा आया. बनाए एक पुरु एक शिव की है, अतः शिवत्व का अंत नहीं. लेखकों के मानना से स्पष्ट: उत्तराए एवं पुरु के चारित्रिकों के साथियों मानता पुरु शिवत्व और अगस्त के साथ संपृक्त होने के मार्ग पर प्रशस्त हो पाता था और पाठक उन पुरु-शिव मानव का

बुक लॉग

पुस्तक का नाम
काशी गाथा-सुकृति
लेखक : नन्दीश तकार और रश्मि छाजेड़
प्रकाशक : शिव प्री साई प्रकाशन, वाराणसी
कीमत : 501 रुपये

पहा के इस जालमें में उन दोपहिक रहस्यों से जानना होगे, जिनको काशी अन्यथा भी न की होगी. शिवत्व में काशी के मणिकर्णिका घाट की महिमा के बखान के साथ यहीं पर जलते शव के पास से पहा को उबार धनाया है और कथा का पाठक गया अंगत्र गयुत्र-शिवत्व की उंची दाहा के बाद मणिकर्णिका घाट पर ही प्राप्त होजाता है. बीच में कुछ कथाएं भी जोड़ी गयी हैं. शिव काशी को कहीं में भी मगर यह कि जहां पर मोत से नहीं स्वर्ग मिलता है, उस काशी को महिमा का बखान भी लेखक द्वय ने किया है और कहा है कि काशी के कण-कण में शिव विराजमान हैं. एक जगह शिव ने कहलवाया गया है- मैं शिव हो गया जो गंगा के तीरे पर धारण करता हूं एक काशी ने यह गंगा उलटबांसियों है. इस रहस्य के उद्घाटने ही जीव गुरु शिव से एकाकार के मार्ग पर प्रशस्त हो जाता है. शिवत्व का यह दुलभ संस्करण है.